

DPN 6330

Title : धर्मलक्ष्मी संवाद DHARMA LAKSMI SAMBADA

Run. No. 7021

Cat. No. 15

Micro. No.

Subject Story.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.8 x 8

Folios 5

Lines (in a page) 5 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

डा. कमलप्रकाश मल्ल

Date: NS / SS / VS / KS 2122 (?)

Ruler / place Dr. Kamala Prakash Malla

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति श्री धर्मलक्ष्मी संवादे पंचमोऽध्याय ॥ ५ ॥

कुरति स्वास्ति को प्रलङ्घितो तव्य सा वंर माम व
स्ति न भति धर्म के उलङ्घनी ले विस्तार क दिन ॥ इति
श्री धर्म लक्ष्मी सभा दे प्रथमे अय ॥ १ ॥ श्री लक्ष्मी
उवाच ॥ हे धर्म प्र व स्वस्ति काल कि न म क दं कु ॥ प्राप्ते

लेविस्तार सुनुद वसा जो स्वास्ति को सित ल वचं छदि
 मा वंत छुदु लो ज दिन यप्रि प्रो ता प्रां पदि काल सित
 इति नम कदं दु सुनुद वस जो स्वास्ति को निद्रा थोरै
 स थोरै पा न्य दसि ल वंति दा ॥ जो गव मि रुदा ॥
 जो स था स विर दं दा जो स्वास्ति वं वल दै न प्रो फ

ना पुरुष का भक्ति मार प्र कि दा ॥ क ल प्र र घाल ग
 दि न जो स व सु ड सित र दं दा ॥ जो प्र की दे प्रि द या वं
 त द र ति थो क सो स्ति को ल दान दो त व स्वा स्ति ये स्त
 थर्म मार प्र नु भ नि म क दं दु सुनुद वस स्वास्ति र
 श क प प्र रा त क दै उठ नु वा नि र जा नु गो न ज नि ॥ इति व न लि नु नि

20

15

10

5

॥ मनुष्य को इति श्री धर्मलक्ष्मी संवादे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्री
 धर्म उवाच ॥ देवदत्त पुत्रि जन्म माता गण को पापनेष्टे स
 जन्म माता देवा उपर ह सुनु त व स लो ता बोस का पाप
 ले जोरु को जन्म हुं ॥ का सो बाय का पाप लवति रो हुं ॥
 इति श्री धर्मलक्ष्मी सम्वादे षष्ठोऽध्यायः ॥ सुभो वा प्रसु

भो वा मदोषो न दिये ते ॥ निदां गय का पाप ले द रि दि द्रो ला
 १३ गं मय ग व न ग य का पाप ले प्रा फु दो तो ला ॥ पराया को
 अत स पति देषि लो भ ग दु दि क ग लि ग य ~~दु~~ देषि य स
 लो ग सा स ना पा उ ह उ स लो ग ल क प्र ह ॥ य स ला ग मा स
 य पति य रि लो ग मा सो गे वा स ह क ॥ ६ ॥ श्री स के = ११२२

उठ भौंस बढि दिसि नदिसा गया भनि देषा सुक्या कौरव बढा
 भनि देषा मनुक प्रवसः॥ दाहि नाना तमास पदव्या भनि दे
 षा धन पुत्र मिलोसः॥ विराली मजुर करं करुं नु ज्य को देषा
 सत्रु सित ज ग रा प्रवसः॥ प्रथवा प्रापे नाना तमास सित ज ग रा
 प्रवसः॥ बाल वंदु बाल सुखी देषा भनि रोगि मां दस ले देषा स्वा
 प्रा देषा री ग कुं ठी स री ग न न्या मां दस ले देषा राज मात मिली

सः॥ बडा पोषरि मा जलु मा वि उदुद पिर पं का इषाया भनि देषा
 प्रसी पुत्र धन ला भलो लाः॥ सर्प विदिसि ला इ देषा धन प्रान ले
 न विताया की धन ला भद्र वसः॥ वधूत पूसा भनि देषा
 राज मात मिलोसः॥ रगत मदी पया भनि देषा वरुन ला इ
 विद्या ला भद्र वसः॥ मरुजात ला इ धन प्रति वसः॥ प्रसी का

फुल का फल को फुल का बर को फुल पल को फुल देखा
 सो क सत्ता प वही सः॥ प्रमि मा न द व सः॥ फल फुल को देखा
 प्रदी ताले देवता को पूजा ग सा भति देष्या अत आत्मा त्यादि ला
 भ द व सः॥ फल फुल देष्या वही प्रा गो देष्या राजा राजा द रु को व
 डी रु द व सः॥ मा मा विधि द व सः॥ जारा द रु को वि वा द भयो
 भति देष्या मा मा दु ष दारि द व सः॥ का म धी रु को वा दि
 सि से व स स स

ति द व सः॥ तारा वत मा मा दे वा दि इ स देवता को व स त पा या भति देष्या
 ज स ध त ला भ द व सः॥ तेल सा ल्या भति देष्या पुत्र ज म लाः॥ प्रा फ ता स
 रि र मा स र्प ले षा यो भ्या गु ता ले षा यो भति देष्या ज स ध त प्रति द व सः॥ दे व
 ब्रा म्म न जी भि देष्या जी वी ल्या की फल सिद्धि मी लाः॥ हु ला प र्त मा व द्या की दि
 त मा मि द्या की ता उ मा पा र ग या को वा सु लि व ज आ को के दि व स्यु पा आ को देष्या
 ध त मि त्र ला भ द व सः॥ सा व त भ या को मा सु क से ले दि न प्रा यो भति देष्या प्रा कृ य व ज मा गु दि व
 ठ लाः॥ पा व ड क त्या ज स भ इ दि द्या भति देष्या प र दे स जा रु प री सः॥ व त ल ले षा या की

20

15

10

5

रा की सले कृष्ण की वाद लेषाया की कु कुर ल प ज्ञा रा जा की अ य द
 ॥ वर की पर लेषाया की भै सिले पा या की काला सिंह ले काला सर्प ले पा की भ ति दे
 राजा दि क से की भ ये हो ला ॥ श्री गि सं सा सि उ लि मा व स्या की दे ष्या ध त ला भ हो ला ॥
 ना त मा गी ग मा ते ल पा ला श्री र मा क से ले व ध्या की दे ष्या ध त पु त्र ला भ हो ला ॥
 धि र मा थी वि उ द्वा लि षा या भ ति दे ष्या राजा जं व उ हो ला ॥ वे स मा सु जा मा भ ति दे ष्या
 ध त ला भ हो ला ॥ मा पु र ले प्रा फ र्ते मा सु षा या भ ति दे ष्या व हं ला उ ला ॥ वर भि व र्ति स्ता
 मा उ धी उ भौ त ला त ले मा दि स्ता पा ठा ग या भ ति दे ष्या वि द्या ला भ हो ला ॥ द फि ला